eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

संगीत में कल्पना तथा सृजन का महत्व

[1]अलका सिंह
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर (संगीत) दयानन्द गर्ल्स पी0जी0 कॉलेज, कानपुर, उ0प्र0, भारत

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

Abstract

संगीत कला का सम्बन्ध मानवीय संवेदनाओं से है। यह कला गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं का समागम है। जब भावनाओं की अभिव्यक्ति स्वर, लय तथा ताल में निबद्ध कर की जाती है, तब संगीत का जन्म होता है। संगीत एक ऐसी विशिष्ट ललित कला है जिसमें कलाकार अपने मनोगत भावों को कल्पना से अलंकृत कर सृजन के माध्यम से मूर्त रूप प्रदान करता है। संगीत कला साधन भी है तथा साध्य भी। यह मूर्त तथा अमूर्त दोनों ही रूपों में विद्यमान है। संगीत कला का प्रभाव चेतन तथा अचेतन पर समान रूप से पड़ता है। इस कला का प्रभाव चिरकालिक तथा सर्वव्यापी है संगीत कला के सर्वश्रेष्ठ होने का आधार है संगीत कला में कल्पना तत्व का विद्यमान होना। कल्पना वह शक्ति है जिसके माध्यम से कलाकार अपनी कला का पूर्णतः एक नवीन तथा पृथक स्वरूप प्रदान कर सकता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। श्रोता सदैव कुछ परिवर्तित तथा नवीन श्रवण की इच्छा से प्रेरित हो संगीत कार्यक्रमों में आता है। किसी भी कलाकार की उपज का काम उसकी कल्पना क्षमता तथा सृजनात्मकता की क्षमता पर ही निर्भर करता है तथा कलाकार का अभ्यास तथा उसकी साधना उसकी कल्पनाओं को मूर्त रूप प्रदान कर नवीन सृजन कर कुछ नया, परिवर्तित श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत करने में सहायक होती है। कलाकार की श्रेष्ठता तथा किसी भी संगीत कार्यक्रम में सफलता उस कलाकार की कल्पना तथा सृजनात्मकता पर ही मात्र निर्भर करती है।

मुख्य शब्द– कल्पना, सृजनात्मकता, श्रोता, कलाकार, मूर्त, निबद्ध

Introduction

संगीत मानव जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करने वाली कला है। इसका प्रभाव चिरकालिक तथा स्थाई होता है। संगीत को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा तथा समग्र मानव जाति की भाषा के रूप में भी स्वीकारा जाता है। यह भावनाओं के आदान–प्रदान का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है। संगीत के सन्दर्भ में कहा जाता है कि यह अंतःकरण का भोजन है जो परिस्थितियों द्वारा विकृत मानव जीवन में आए हुए ध्वंसक संकल्पों का उन्मूलन कर, उसकी सत्यं, शिवं, सुन्दरं का मार्ग अवलोकित कर, जीवन को अलंकृत करता है। संगीत एक परिवर्तनशील कला है। यहाँ ध्यातव्य है कि यह परिवर्तन सदैव संगीत के बाह्य स्वरूप में तथा अभिव्यक्ति के स्वरूप होता है, न कि संगीत की आत्मा में। संगीत के दार्शनिक आधार सदैव स्थिर रहते हैं तथा कला के मूल तत्व भी निश्चित रहते हैं। कलाओं में ललित कलाओं को श्रेष्ठ माना जाता है तथा ललित कलाओं में भी संगीत का स्थान सर्वश्रेष्ठ तथा उच्च स्वीकारा जाता है। मानवीय भावनाओं की स्वर–लय के माध्यम से व्यक्त करने वाली अविरल धारा ही संगीत है। संगीत कला की सर्वश्रेष्ठता का एक प्रमुख कारण यह भी है कि अन्य कलाओं में सौन्दर्य बाह्य साधनों के माध्यम से डाला जाता है अथवा आरोपित किया जाता है परन्तु संगीत एकमात्र ऐसी कला है जिसमें सौन्दर्य स्वतः ही विद्यमान रहता है। प्रो. हैन्सलिक ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि,''Music is an art of self contained beauty". संगीत कला के अन्तर्गत कलाकार तथा श्रोता दो पक्ष होते हैं जिनके मध्य भावों का आदान–प्रदान होता है। भावों के इस आदान–प्रदान का आधार

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

होता है कलाकार तथा श्रोता की कल्पना और जब इन दोनों की कल्पना में एक्य स्थापित हो जाता है तभी श्रोताओं के हृदय में वास्तविक सौन्दर्य उत्पन्न होता है। कल्पना मानव का विशेष तथा मौलिक गुण है। वास्तव में यह मनुष्य के अन्तः में निहित एक मनोवैज्ञानिक क्रिया है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने पूर्वानुभव के आधार पर नवीन निर्माण करता है। उग्विल ने कल्पना के सन्दर्भ में लिखा है ''मनोविज्ञान में कल्पना शब्द का प्रयोग सब प्रकार की प्रतिभाओं के निर्माण को व्यक्त करने के लिए किया जा सकता है।'' इसी प्रकार रिचड्र्स ने कहा है,''कल्पना मनोवेगों को जगाती है, कल्पना बिम्बों की सृष्टि करती है, कल्पना से ही कला अलंकृत होती है कल्पना नवीन रचना में सुन्दरता व विभिन्न तत्वों में एकता उत्पन्न करती है, कल्पना में दो विरोधी तत्वों के समाहार की स्थिति होती है।''

अतः कहा जा सकता है कि पूर्वनिर्मिति में अपनी स्मरण, इच्छा व अभ्यास शक्ति के माध्यम से नवीनता उत्पन्न करना कल्पना ही है।

जहाँ कल्पना एक ओर आन्तरिक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है तो वहीं दूसरी ओर सृजनात्मक उसी आन्तरिक प्रक्रिया की बाह्य अभिव्यक्ति है। सृजनात्मकता एक मानसिक प्रक्रिया है। प्रत्येक कल्पना सृजन का रूप धारण कर अभिव्यक्त नहीं हो सकती है परन्तु प्रत्येक सृजन के पीछे कल्पना का ठोस आधार आवश्यक रूप से होता है। कल्पनाओं के अभाव में सृजन सम्भव ही नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति में कल्पना शक्ति किसी न किसी रूप में अवश्य ही विद्यमान रहती है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति में सृजन क्षमता हो, यह आवश्यक नहीं है।

भारतीय संगीत गायन, वादन तथा नृत्य तीनों विधाओं का एक्यरूप है। भारतीय संगीत को रागदारी संगीत भी कहा जाता है अर्थात् भारतीय संगीत में राग की प्रधानता है तथा कलाकार राग गायन के माध्यम से रस निष्पत्ति करता है। कलाकार राग गायन से पूर्व सौन्दर्य की कल्पना करता है तदुपरांत अपनी साधना तथा अभ्यास के माध्यम अमुक राग को एक नवीन बाह्य स्वरूप प्रदान करता है। कलाकार अपनी साधना कल्पनाशीलता तथा सृजन शक्ति के माध्यम से राग में नित्य नवीन चेतना तथा सौन्दर्य का संचार करता है। किसी भी कलाकार की श्रेष्ठता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि वह कितना अधिक कल्पनाशील है। रागदारी संगीत के अन्तर्गत यद्यपि नायकी तथा गायकी दोनों में ही कल्पना का विशेष महत्व है तथापि यह माना जाता है कि गायकी में नायकी की अपेक्षा कल्पनाओं का आकाश अधिक फैला होता है। गायकी के अंतर्गत कलाकार विभिन्न आलाप, तानें, मुखड़े, कण, मीड़ गमक, मुर्की, खटका आदि के माध्यम से अपनी कल्पना को बाह्य सृजन के रूप में अभिव्यक्त करता है। जिससे श्रोताओं को आनन्दानुभूति प्राप्त होती है।

इसी प्रकार वादन तथा नृत्य विधाओं में भी कल्पना तथा सृजनात्मकता प्रदर्शित करते हुए कलाकार विभिन्न रूपों में उपज का काम दिखाते हैं। वादन के अन्तर्गत किसी भी विस्तार योग्य रचना का विस्तार मात्र कलाकार की कल्पनाओं के आधार पर ही सम्भव है। विभिन्न पेशकारों, कायदों आदि के पल्टे, विभिन्न तिहाइयाँ, टुकड़े, परन, गत–कायदा, कायदे से निर्मित रेला, बाँट, मोहरें आदि अनेकों ऐसे उदाहरण हैं जो वादन के अन्तर्गत कलाकार की कल्पना क्षमता तथा सृजनात्मकता को प्रदर्शित करते हैं तथा श्रोताओं को वाह–वाह कहने पर मजबूर कर देते हैं। इसी प्रकार नृत्य विधा के अन्तर्गत विभिन्न तोड़े, टुकड़े, आमद, तिहाइयाँ, परनें आदि अनेकों ऐसी बंदिशें हैं जो सीधे कलाकार के घुंघरुओं से उत्पन्न कल्पना को सृजन का रूप देते हुए दर्शक के हृदय को छू जाती हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत एक ऐसी ललित

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

कला है जिसका प्रमुख उद्देश्य है श्रोता के हृदय में सौन्दर्यानुभूति तथा आनन्दानुभूति उत्पन्न करना। संगीत कला के इस उद्देश्य को मात्र कलाकार की कल्पना क्षमता तथा सृजनात्मकता के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. आचार्य बृहस्पति (1976), संगीत चिंतामणि, हाथरस, संगीत कार्यालय।
2. उप्पल, सविता (2003), संगीत शिक्षण एवं मनोविज्ञान, चण्डीगढ़, मॉडर्न बुक हाउस।
3. कुलकर्णी, वसुधा (1990), भारतीय संगीत एवं मनोविज्ञान, जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार।
4. चक्रवर्ती, कविता (1990), संगीत की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, जोधपुर, राजस्थानी ग्रन्थागार।
5. चौधरी, सुभद्रा (1984), भारतीय संगीत में ताल और रूप–विधान : लक्ष्य–लक्षणमूलक अध्ययन, अजमेर, कृष्णा ब्रदर्स।
6. जैन, विजयलक्ष्मी (1989), संगीत दर्शन, जोधपुर, राजस्थानी ग्रंथागार।
7. जौहरी, सीमा (2003), संगीतायन, दिल्ली, राधा पब्लिकेशन्स।
8. जायसवाल, सीताराम (1998), शिक्षा मनोविज्ञान, लखनऊ, प्रकाशन केन्द्र।
9. पटवर्धन, सुधा (2016), संगीत शिक्षा, दिल्ली, कनिष्क पब्लिशिंग हाउस।
10. परांजपे, शरतचन्द्र श्रीधर (1969), भारतीय संगीत का इतिहास, वाराणसी, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़।
11. शाह, शोभना (1987), संगीत शिक्षण प्रणाली, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
12. शास्त्री, के0 वासुदेव (1968), संगीत शास्त्र, लखनऊ, हिंदी समिति ग्रन्थालय।
13. सिंह, राजेन्द्र प्रसाद (2014), भारतीय संगीत का समाजशास्त्रीय सन्दर्भ, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
14. सिंह, ललित किशोर (1962), ध्वनि और संगीत, दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ।
15. सिन्हा, ज्योति (2015), राग, रोग व रोगी (संगीत चिकित्सा), नई दिल्ली, ओमेगा पब्लिकेशन्स।